15

किस्सा प्रारूपिक फूल का

आमतौर पर हमारे आसपास फूलों, कोशिकाओं, गांव, शहर आदि में इतनी विविधता होती है कि शायद अध्ययन में सुविधा के लिहाज से पाठ्य पुस्तकों में हम प्रारूपिक फूल, प्रारूपिक कोशिका, प्रारूपिक गांव और ऐसी ही कई प्रारूपिक इकाइयां बना लेते हैं। इस लेख में सुशील जोशी ने सवाल उठाया है कि क्या इससे विद्यार्थियों को अपने आसपास की विविधता का अहसास बनाने में अड़चन तो नहीं आती। स्कूली स्तर पर क्या मूर्त से अमूर्त की तरफ जाना बेहतर नहीं होगा?

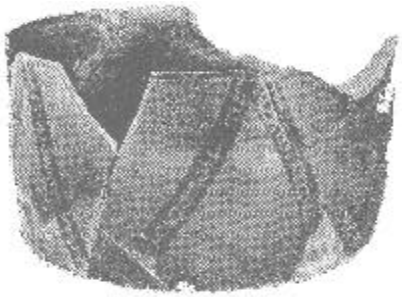

महाभारत और पुरातत्व

बीसवीं सदी में महाभारत के समालोचनात्मक संस्करण का अध्ययन करने से पता चलता है कि इसमें कुछ वर्णन तो ऐसे युग से जुड़े हैं जब गौ पालन ही लोगों का मुख्य पेशा था। वहीं कुछ वृतांतों में विकसित शहरों का वर्णन है। इसलिए महाभारत के काल निर्धारण में समस्या आ रही थी। ऐसे में उम्मीद थी कि महाभारत में वर्णित प्रमुख स्थानों की पहचान और फिर वहां पर उत्खनन से कुछ मदद मिल सकेगी।

हस्तिनापुर में उत्खनन से कई पहलुओं पर प्रकाश पड़ा है, परन्तु साथ ही महाभारत के विविध प्रसंगों के काल निर्धारण के संदर्भ में कई नए सवाल उठ खड़े हुए हैं।

49

शैक्षणिक संदर्भ

अंक: 6 (54) अप्रैल-मई 2006

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **सही जवाब - गलत जवाब**
डेविड जरनेर मार्टिन

15 | **किस्सा प्रारूपिक फूल का**
सुशील जोशी

26 | **तेज़ी से वृद्धि करता जीवाणु**
मार्टिन गार्डनर

27 | **गणित - कैसे रुचिकर बनाएं**
प्रमोद मैथिल

33 | **ऋणात्मक संख्याओं का गुणा**
जयश्री सुब्रह्मण्यम

36 | **ग्रेफाइट को पिघलाने की समस्या**
सवालीराम

39 | **नामकरण भारी तत्वों का**
जितेन्द्र बेरा

49 | **महाभारत और पुरातत्व**
पी. के. बसंत एवं सी. एन. सुब्रह्मण्यम

64 | **पुस्तक समीक्षा - पक्की दोस्ती**
तेजी ग्रोवर

69 | **पुस्तकालय मतलब क्या**
जितेन्द्र कुमार

73 | **रॉकेट**
रे ब्रेडबरी

87 | **इंडेक्स अंक 49-54**